भाषा शिक्षण

अनुभव एवं कुछ गतिविधियां

दिलिप चुघ

आमतौर पर स्कूलों, दोनों ही- राजकीय और निजी, की आरंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण में बच्चों के पढ़ने और लिखने के कौशल के विकास पर बहुत जोर दिया जाता है। इसके लिए अक्षर पहचान, शब्द पहचान, क्रम से वर्णमाला बोल पाना, विभिन्न मात्राओं के उच्चारण, अक्षरों से मिलकर बने शब्द और वाक्य पढ़ने जैसी कवायदों में बच्चों को लगे देखा जा सकता है। क्या इन कवायदों से बच्चों में समझकर पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास हो पाता है ? इस सवाल का सटीक जवाब मिलना मुश्किल है। अध्ययन बताते हैं कि अधिकांश बच्चे कक्षा 5 की पढ़ाई पूरी करने तक पढ़कर समझ पाने के आरंभिक कौशलों को अर्जित कर पाने में काफी पीछे रहते हैं। परिणाम के तौर पर, समझकर पढ़ने के कौशल पर पकड़ के अभाव में रटकर सीखने की प्रक्रियाएं ज्यादा मुखर रूप से सामने आती हैं।

लेखक परिचय

साहित्य में एम.ए., करीब 7 वर्षों से स्वयंसेवी संगठनों में कार्यरत।
संप्रति : कैवल्य फाउन्डेशन, झुंझूनू में कार्यरत।

संपर्क

30, एन.ई.बी., सुभाष नगर,
अलवर-301001 राजस्थान

भाषा शिक्षण के क्षेत्र में काम करते हुए मेरा सामना ऐसे बच्चों से होता रहा है जो शब्दों और वाक्यों को यांत्रिक तरीके से पढ़ते हैं। इन बच्चों को पढ़ते देखकर यह पता लगा पाना मुश्किल होता है कि वे जो पढ़ रहे हैं उसे समझ कितना रहे हैं। उपरोक्त तरीके से भाषा सीखने की प्रक्रिया में कुछ समय के लिए यांत्रिक रूप से पढ़ने की अवस्था लगभग उन सभी बच्चों को आती है जो भाषा के लिखित स्वरूप (लिपि) को आरंभिक स्तर पर समझने की कोशिश कर रहे होते हैं, लेकिन यह समस्या उन बच्चों के लिए ज्यादा विकट हो जाती है जिन्हें अपने स्कूल में एवं घर-परिवार तथा परिवेश में हिन्दी भाषा बोलने-सुनने, लिखने और लिखित भाषा से रूबरू होने के पर्याप्त अवसर नहीं मिलते। ऐसे बच्चे हिन्दी भाषा के लिखित एवं मौखिक स्वरूप से खासी दूरी और अजनबीयतपन महसूस करते हैं। पढ़ना और लिखना सीखने की इस पूरी प्रक्रिया में दो समस्याएं स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं :

- स्कूलों में भाषा शिक्षण के तौर-तरीकों का उपयुक्त नहीं होना।
- सुदूर ग्रामीण परिवेश में हिन्दी भाषा के लिखित व मौखिक स्वरूप से बहुत कम सामना होने के कारण बच्चों के पास हिन्दी भाषा पढ़ना-लिखना सीखने के पूर्व आधार का नहीं होना।

ये समस्याएं पढ़ना-लिखना सीखने को नामुमकिन तो नहीं बनातीं लेकिन बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को लंबे समय के लिए स्थगित जरूर कर देती हैं। स्कूलों में भाषा शिक्षण के जो तौर-तरीके काम में लिए जाते रहे हैं उनके पक्ष में सामान्यतः यह तर्क दिया जाता है कि इन्हीं तरीकों से बच्चे सीखते रहे हैं। निश्चित ही बच्चे इन तरीकों से पढ़ना-लिखना सीखते हैं, इससे इनकार नहीं किया जा सकता लेकिन हमारे सामने सवाल यह है कि क्या इस तरह बच्चे समझ के साथ पढ़ना सीख पाते हैं ? क्या शिक्षण के कोई ऐसे तौर-तरीके हो सकते हैं जो बच्चों को आरंभिक स्तर से समझकर पढ़ना सीखने में मदद कर सकते हों ?

मौड़ा लात घूंसान से लड़रए

इसी समस्या के मद्देनजर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपेरखा : 2005 का दस्तावेज शिक्षण के माध्यम के तौर पर बच्चे की घरेलू भाषा और संदर्भ से सीखने-सिखाने की पैरवी करता है। यह दस्तावेज बच्चों के द्वारा स्वाभाविक रूप से अपने घर और समाज में भाषा ग्रहण करने के अनुभव का उल्लेख करते हुए इस बात को रेखांकित करता है कि ''बच्चों में भाषा की जन्मजात क्षमता होती है।'' बच्चे स्कूल की शुरुआत के पहले से भाषा की जटिलताओं और नियमों को आत्मसात कर पूर्ण भाषिक क्षमता रखते हैं। इस बात को स्वीकारने के साथ दस्तावेज खासतौर से यह कहता है कि ''अगर हम भाषा शिक्षण के लिए स्कूल में कोई कार्यक्रम शुरू करते हैं तो यह महत्त्वपूर्ण है कि बच्चे की सहज भाषाई क्षमता को पहचानें...।'' इसमें भाषा शिक्षण के लिए यह स्पष्ट दिशा-निर्देश दिया गया है कि ''प्राथमिक स्तर पर बच्चों की भाषा(ओं) को बिना सुधारे उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए जिस रूप में वे होती हैं। कक्षा 4 के बाद अगर समृद्ध और रुचिकर मौके दिए जाएं तो बच्चे स्वयं भाषा के मानक रूप को ग्रहण कर लेते हैं, लेकिन इस प्रक्रिया के दौरान बच्चे की घरेलू भाषा के प्रति उचित सम्मान का भाव बना रहना चाहिए।'' बच्चे की घरेलू भाषा के प्रति सम्मान उसमें अपने परिवेश और स्वयं अपने प्रति आत्मविश्वास को बढ़ाता है जो नई भाषा और ज्ञान को अर्जित करने के लिए उसके उत्साह को बनाने और बढ़ाने में सहायक साबित हो सकता है। बच्चों की भाषा के प्रति स्वीकार अब कक्षा में भाषा समृद्ध वातावरण के निर्माण में भी मददगार होता है।

कक्षा में बच्चे अपनी भाषाई क्षमता का इस्तेमाल और विकास कर सकें इसके लिए कक्षा के वातावरण में बच्चों के लिए बातचीत के पर्याप्त अवसर उपलब्ध होना भी बहुत जरूरी है। खासतौर से आरंभिक स्तर पर जब बच्चा लिखना नहीं जानता है तो भी वह अपनी भाषाई क्षमता और ज्ञान को बोलकर ही दूसरों के साथ बांट सकता है। इसके लिए कक्षा में इस तरह की गतिविधियों के लिए भरपूर गुंजाइश होनी चाहिए जिनमें बच्चे अपनी बात कह सकें और दूसरों की बातों को सुन सकें। सार्थक संवाद का माहौल बच्चों की भाषाई क्षमता के विकास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

मौखिक भाषा की ही तरह लिखित भाषा के विकास में भी वातावरण की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। सुदूर ग्रामीण परिवेश से आने वाले बच्चों के पास लिखित भाषा का वातावरण घर में उपलब्ध नहीं होता। ऐसे में यह उत्तरदायित्व भी स्कूल को वहन करना चाहिए कि वह बच्चों को लिखित भाषा का समृद्ध वातावरण उपलब्ध कराए। लिखित सामग्री से लगातार सामना और उसके साथ सार्थक संवाद और गतिविधियां बच्चों को लिखने और पढ़ने के साथ सहज बनाने में सहायक होती हैं।

इसके अलावा पढ़ना-लिखना सीखने के संदर्भ में दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि समझकर पढ़ पाने में अंदाजा लगाकर पढ़ पाने की अहम भूमिका होती है। किसी भी भाषा का परिपक्व पाठक किसी पठन सामग्री का अध्ययन करने के दौरान लिखे हुए का अंदाजा लगाते हुए आगे पढ़ता जाता है। यदि हम अपने पढ़ने के अनुभव पर थोड़ा विचार करें तो पता चलता है कि हम किसी पाठ को सिर्फ शब्द दर शब्द ही नहीं पढ़ते बल्कि खास संदर्भ में अर्थ के साथ पढ़ते चले जाते हैं। यही वजह है कि अनेक बार वर्तनी की अशुद्धियां भी हमें पकड़ में नहीं आतीं। क्योंकि हमारा मस्तिष्क उस समय संदर्भ के साथ अर्थ की खोज कर रहा होता है।

उपर्युक्त समझ के बाद शिक्षक के सामने यह समस्या बनी रहती है कि कक्षा-कक्ष में भाषा शिक्षण के कौन से तरीके उपयुक्त हो सकते हैं जो न केवल बच्चों को पूरे संदर्भ के साथ हों और साथ ही उनकी मातृभाषा और मानक भाषा के बीच सेतु निर्मित करें ?

मैं अब बच्चों के साथ शिक्षण के अपने अनुभवों पर बात करना चाहूंगा। मैंने बारां जिले के आदिवासी इलाके में चल रहे कार्यक्रम में सहायक समन्वयक और शोधकर्ता के रूप में काम किया है और यह कार्यक्रम अब अपनी समयावधि पूरी करने के बाद अभी बंद हो चुका है। इस कार्यक्रम का मकसद आदिवासी बच्चों को सीखने में आने वाली समस्याओं, खासतौर से भाषा

लाल चट, गोल गट, आया
पांवणा लेगा झट टमाटर

के सीखने में आने वाली समस्याओं, उनके कारणों की खोज और उनके समाधान के लिए वैकल्पिक नजरिए एवं पद्धति की तलाश करना रहा है। यह कार्यक्रम राजकीय विद्यालयों में संचालित हुआ है और कुछ विद्यालयों को संदर्भशाला के तौर पर विकसित किया गया। मुझे बच्चों के साथ काम करने के मौके नियमित अन्तराल से मिले हैं और मैंने इन शालाओं में कार्यरत राजकीय शिक्षकों के साथ मिलकर सहरिया आदिवासी बच्चों के भाषा शिक्षण में आने वाली समस्याओं पर काम किया है।

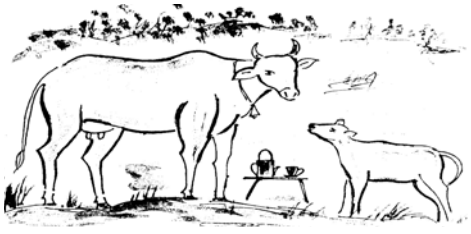

बछड़ा बोला गाय से
दूध नहीं पीना है मुझको
काम चलेगा चाय से

सहरिया आदिवासी बच्चों को अनेक वजहों से शिक्षा के साथ संघर्ष करना पड़ता है। यह समुदाय आर्थिक और शैक्षिक दृष्टि से अत्यंत पिछड़ा हुआ है। इस समुदाय के बच्चों को स्कूल के मौजूदा माहौल में गंभीर समस्याएं झेलनी पड़ती हैं। स्कूल की भाषा और घर की भाषा के बीच की दूरी इन समस्याओं में से एक है। शिक्षण की विषयवस्तु और तौर-तरीकों का इन बच्चों की जरूरतों से बहुत अलग होना इस समस्या को और गहराता है। जब हमने इस समस्या को पहचाना तो भाषा शिक्षण के लिए कुछ तौर-तरीके सुझाए और गतिविधियां विकसित कीं। यह दावा तो नहीं किया जा सकता कि यह तौर-तरीके और गतिविधियां सर्वोत्तम हैं लेकिन हां, इतना जरूर कहा जा सकता है कि बच्चों ने इस पूरी प्रक्रिया में आनन्द लिया और उनके भाषा शिक्षण पर भी असर देखा गया है। मैं यहां हमारे द्वारा विकसित की गई कुछ गतिविधियों व उनके अनुभवों पर चर्चा करना चाहूंगा। यह अनुभव दिगन्तर द्वारा संचालित संदर्भशाला परियोजना के अर्न्तगत बारां जिले के आदिवासी अंचल के बच्चों के साथ हिन्दी भाषा शिक्षण/पढ़ना-लिखना सीखने-सिखाने तक सीमित हैं।

हमने इन गतिविधियों को विकसित करते हुए इस बात का खासतौर से ध्यान रखा कि कक्षा में बच्चों की घरेलू भाषा को पूरा सम्मान और स्थान मिले। बच्चे अपनी बात को अपने घर की भाषा में कह सकें। पढ़ने और लिखने के कौशल के विकास में भी बच्चों के घर की भाषा को वरीयता देते हुए इस कार्यक्रम के तहत खासतौर से ऐसी शिक्षण सामग्री और कार्य पुस्तकें तैयार की गईं जिनमें सामग्री को बच्चों की घरेलू भाषा में प्रस्तुत किया गया। इस तरह की सामग्री के साथ पढ़ते-लिखते हुए बच्चे छपी या लिखित सामग्री के साथ ज्यादा सरलता के साथ संबंध बना पाते हैं। वे इस बात को समझ पाते हैं कि उनके अनुभवों और जानकारियों को भी लिखा जा सकता है। यह समझ उन्हें स्वाभाविक तौर पर यह समझने में भी मदद करती है कि लिखी और छपी हुई सामग्री कुछ अबूझ आकृतियां मात्र नहीं हैं बल्कि उनमें कुछ अर्थ छुपे हुए हैं। जब बच्चे इस समझ के साथ पढ़ना-लिखना शुरू करते हैं तब उनके लिए पढ़ना एक यांत्रिक प्रक्रिया मात्र नहीं रह जाती है और वे पढ़ने के साथ अर्थ

मौलिक लेखन व सृजन

''भाषा के कालांश में आज मैंने 2 बच्चों के साथ सचित्र कहानी कार्ड पर कार्य किया। दोनों बच्चों ने कार्डों को कहानी के क्रम के अनुसार जमा दिया। एक बच्चे गिर्राज ने कहानी के 8-9 वाक्य लिखे व कहानी भी ठीक बनाई। ...ये बच्चे किसी संदर्भ को पढ़कर अपने मन से लिखने में कतराते थे। लेकिन अब ये इसमें रुचि लेने लगे हैं।...

- अनुभव, रामलाल, शोध शिक्षक (12/03/10)

आज समूह में मैंने भाषा के कालांश में पहेली पर काम करवाया। बच्चों ने 4 पहेलियां पूछीं (बूझी) व अन्य बच्चों ने इसके जवाब दिए। सुनील ने पहेली स्वयं समूह में बैठकर तुरन्त बनाई कि ''एक आदमी जो गाना गाए, जमे तब बात कर लो।'' इस पहेली का जवाब अन्य बच्चे नहीं दे पाए। बाद में उसने इसका जवाब बताया- ''मोबाइल''। इस पहेली पर मैंने बात की तो उसने बताया कि ये मैंने अभी हाथों हाथ बनाई है।

- अनुभव, रेशमा, शोध शिक्षिका (18/3/10)

कालांश के बाद भी

''...आगे देखता हूं कि तीन लड़कियां दीवार पर लगे शब्द चित्र कार्डों को देखकर शब्द लिख रहीं हैं। मैंने जब पूछा कि जे का लिख रौ है ? तभी लड़कियों ने सभी 12 से 15 शब्दों को ठीक पढ़कर सुनाया''

- अनुभव, सुभाष, शोध शिक्षक (4/12/09)

''अपना काम समाप्त हो जाने पर वह (सरोज) दीवार पर लगे शब्द पढ़ने लग जाती है।''

- अल्का बंसल, शोध शिक्षिका (4/11/09)

की खोज करते हैं। बच्चों के साथ बातचीत के दौरान कुछ बातों को कार्ड पर लिखकर कक्षा में चिपकाने जैसी गतिविधियां इस दृष्टि से बहुत कारगर साबित हुईं। इन गतिविधियों में बच्चे यह जानते हैं कि जो लिखा जा रहा है वह उन्हीं की बातचीत से निकाला है।

निश्चय ही यह समझ वर्णमाला को रटकर नहीं बनाई जा सकती। इसके लिए बहुत जरूरी है कि बच्चों के साथ छपी हुई सामग्री के साथ होने वाली हर अंतःक्रिया कुछ अर्थों को अपने में समेटे हुए हो। इस तरह अर्थ निर्माण के साथ बच्चे पढ़ना-लिखना सीखें इसके लिए इन गतिविधियों में यह प्रयास लगातार किया गया कि बच्चों के साथ सार्थक संदर्भों के साथ कहानियों, कविताओं का पाठ करते हुए धीरे-धीरे उन्हें वर्णों से परिचित कराया जाए।

भाषा की कक्षा में बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के भरपूर अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से ऐसी गतिविधियां विकसित की गईं जिनमें बच्चों को अपनी बात ज्यादा से ज्यादा कहने का मौका मिले। प्राथमिक कक्षाओं में संदर्भ शिक्षक स्वयं भी बच्चों के साथ उनके घर की भाषा में बात करने का प्रयास करते हैं ताकि बच्चे अपने समृद्ध भाषाई ज्ञान का कक्षा में उपयोग कर सकें और कक्षा की प्रक्रियाओं में शामिल होने में आत्म-विश्वास महसूस करें। यहां उदाहरण के तौर पर कुछ गतिविधियों के बारे में बताना चाहूंगा।

अंदाजा लगाकर पढ़ना

मेवा सहरिया जो कि अभी तक किताब पढ़ना नहीं जानती उसके पास ''चूहा-बिल्ली'' नाम की एक किताब है। यह बालिका स्वयं की अंगुली को शब्दों पर फेरते हुए पुस्तक को इस तरह पढ़ रही है मानो वह किताब के हर शब्द को पढ़ते हुए बोल रही है। थोड़ी देर मैं सुनती रही। मैं उसके पीछे जाकर खड़ी हो गई और उसे पता नहीं चला। उसके पढ़ने का तरीका इस तरह था- 'एक ऊंदरा था। उसके पीछे बिल्ली पड़ गई। वह चून के पीपा के पीछे घुस गया। बिल्ली उसके पीछे भागी। वह दौड़कर पीपा में कूद गया।...बिल्ली आंखें ऊपर नीचे करते हुए चारों तरफ उसे देखती रही। अचानक चूहा पीपे से बाहर आया। सारा आटे से सकेड-सकेड। यह देखकर बिल्ली डर गई। उसने चूहे को नहीं खाया और वहां से भाग गई।'

- अनुभव, इन्द्रा, शोध शिक्षिका (23/11/09)

- **क्रियात्मक चित्रों पर काम :** समूह में शिक्षक बच्चों को एक क्रियात्मक चित्र दिखाते हैं और चित्र पर बातचीत करते हैं कि चित्र में क्या हो रहा है या क्या दिख रहा है ? बच्चों की बताई बातों में रुचिकर बातों को बच्चों के साथ सहमति बनाकर चित्र के नीचे स्केच पेन से लिख दिया जाता है। यह बात सामान्यतः एक से दो वाक्यों में होती है। अब शिक्षक इस चित्र को समूह में ऐसी जगह चिपका देते हैं जहां इसे बच्चे देखते हुए आसानी से पढ़ सकें।
- **स्थानीय व हिन्दी भाषा की पहेलियां :** स्थानीय समुदाय में प्रचलित पहेलियों में से चयनित पहेलियों को शिक्षक बच्चों से बूझते हैं और बच्चे भी पहेली बूझते हैं। बच्चे पहेली के उत्तर का अंदाजा लगाकर बताते हैं। अब शिक्षक इस पहेली को चार्ट पर लिखकर समूह में ऐसी जगह चिपका देते हैं जहां इसे बच्चे देखते हुए आसानी से पढ़ सकें। इसके अलावा समूह में दो दल बनाकर भी पहेलियां बूझने का काम करवाया जाता है। इन पहेलियों को भी चार्ट पर लिखकर समूह में प्रदर्शित किया जाता है।
- **आज की बात :** यह गतिविधि आज की किसी खास खबर की तरह है जिसमें शिक्षक सामूहिक रूप से बच्चों से कहते हैं कि आज की कोई बात/खबर बताओ। इच्छुक बच्चे अपने घर, गांव, स्कूल में घटी कोई महत्त्वपूर्ण घटना बताते हैं। शिक्षक किसी एक या एक से अधिक बातों को चार्ट या ब्लैकबोर्ड पर सभी बच्चों की सहमति से लिख देते हैं। लिखी गई आज की बात पर चर्चा भी की जाती है। जिस बच्चे ने यह बात बताई है, उसका नाम भी आज की बात के नीचे लिख देते हैं। अगर एक से अधिक बच्चे कोई रुचिपूर्ण बात बताते हैं तो उन्हें भी लिख देते हैं।
- **छोटी-छोटी कविताएं (हाइकू) :** शिक्षक बच्चों को समूह में कविता चित्र दिखाते हैं और चित्र पर बातचीत करते हैं कि चित्र में क्या हो रहा है या क्या-क्या दिख रहा है ? इसके बाद चित्र के साथ लिखी हुई कविता को बच्चों को पढ़कर सुनाते हैं। शिक्षक इस चित्र कविता को समूह में ऐसी जगह चिपका देते हैं जहां इसे बच्चे देखते हुए आसानी से पढ़ सकें।
- **पुस्तकालय की पुस्तकों पर काम :** बच्चों के स्तर के अनुरूप पुस्तकालय से पुस्तकें बच्चों के बीच में रख दी जाती हैं। बच्चे अपनी पसंद की पुस्तकें उठाते हैं और पढ़ने की कोशिश करते हैं। जो बच्चे पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रिया में हैं वे चित्र देखकर कहानी और लिखे हुए वाक्यों को अंदाजा

लगाकर पढ़ने की कोशिश करते हैं। शिक्षक द्वारा भी इन पुस्तकों से कोई-कोई कहानी चित्र दिखाते हुए सुनाई जाती है।

- इसके अलावा बच्चों के साथ मिलकर नाटक, कठपुतली शो करना, कहानियां-कविताएं बनवाना, बच्चों की किताबिया बनवाना आदि गतिविधियां भी शिक्षकों द्वारा की गई।

इन गतिविधियों में किन्हीं खास अक्षरों या शब्दों को किसी खास क्रम में सिखाने के आग्रह नहीं हैं। यहां पर उद्देश्य यही रहता है कि बच्चों को अंदाजा लगाकर पढ़ पाने के ज्यादा से ज्यादा अर्थवान व रुचिकर मौके मिलें। पढ़ने-लिखने से पहले बच्चों के साथ होने वाली बातचीत उन्हें लिखी गई सामग्री के बारे में अनुमान करने में मदद करती है और बच्चों की उसमें रुचि भी बनी रहती है। राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों ने भी इस बात को महसूस किया है कि इस तरह काम करने से भाषा की कक्षा में बच्चों के सीखने के स्तर में बहुत सुधार आया है। शिक्षकों ने समय-समय पर अपने अनुभव दर्ज कराए, जो इस प्रकार रहे हैं :

- भाषा में इन गतिविधियों से कालांश जीवन्त बना है। इससे भाषा के कालांश में बच्चों को अभिव्यक्ति के ज्यादा मौके मिले हैं। बच्चों की सक्रियता बढ़ी है। बच्चों ने क्रिया चित्रों को देखकर कहने व आज की खबर बताने में खुलकर भागीदारी की है। पुस्तकालय की पुस्तकों पर किए गए काम में भी बच्चों का उत्साह रहा है। वे नई किताबों पर और ज्यादा काम करवाने की बात कहते रहे हैं। इन सभी से भाषा सीखना-सिखाना आनन्दमयी बन पाया है।
- बच्चों की बताई आज की खबर, क्रियात्मक वाक्य, निर्देश, पहेलियों, कविताएं, कहानियों को कक्ष में प्रदर्शित किया गया। इसके दो फायदे हुए। एक तो लिखित भाषा के विविध रूपों से बच्चे रूबरू हुए और दूसरे बच्चों की भाषा को कक्षा-कक्ष में स्थान मिलने से सीखने में बच्चों का आत्म-विश्वास बढ़ा है।
- अंदाजा लगाकर पढ़ने की गतिविधियों के दौरान ऐसे अनुभव सामने आए जिनसे पता चलता है कि बच्चे लिखे हुए को अंदाजा लगाकर पढ़ने का प्रयास करने लगे हैं। क्रिया चित्रों पर काम में देखा गया कि जैसे ही वे चित्रों के नीचे लिखा हुआ देखते हैं तो वे उन्हें अंदाजा लगाकर पढ़ने का प्रयास करते हैं। इस क्षमता के विकास में क्रियाचित्रों पर हुआ काम, पुस्तकालय की पुस्तकों पर हुए काम से बहुत मदद मिली है।
- कल्पना व मौलिक लेखन के कामों में बच्चों ने भागीदारी करना आरंभ कर दिया है। बच्चों ने स्वयं कहानियां-कविताएं बनाने, अपनी बातों को लिखने में रुचि से भागीदारी की है। पढ़ना-लिखना सीखने तक बच्चे 8-10 वाक्यों में अपने सपने, कविताएं, कहानियां, घटनाएं लिखने लगे हैं और किसी विषय पर मन से लेखन कर लेते हैं। बच्चों ने शोध शिक्षक के साथ मिलकर कहानी, कविताएं व पहेलियां बनाई हैं। इन कहानी-कविताओं को दीवार पर लगाए जाने की मांग करते हैं तथा प्रदर्शित किए जाने पर बार-बार पढ़ते देखे गए हैं। बच्चे अपनी कहानी, कविताओं को घर पर ले जाकर दीवारों पर लगाकर पढ़ते हैं। बच्चों के लेखन में आत्म-विश्वास नजर आता है। बच्चे अपनी सुनी हुई कहानियों, कविताओं को तत्परता से लिख लेते हैं।

भाषा शिक्षण के बारे में दृढ़ हुई मान्यताएं

इस काम के बाद संदर्भशाला परियोजना समूह की भाषा शिक्षण के बारे में जो मान्यताएं बनी वे इस तरह से हैं :

- भाषा शिक्षण के कालांश में बच्चों का भाषा के लिखित व मौखिक स्वरूप के विविध रूपों से रूबरू करवाना चाहिए। अपनी बात कहने, कहानियां सुनने-सुनाने, पहेलियां पूछने, निर्देश देने, खबरें पढ़कर बताने, कविताएं गाने जैसे कामों को भाषा के कालांशों में जगह मिलनी चाहिए जिससे बच्चों को अंदाजा लगाकर पढ़ पाने व सामान्यीकरण कर पाने के ज्यादा से ज्यादा अर्थवान मौके मिलें।
- जिन बच्चों के घर की भाषा और स्कूल की भाषा में फर्क होता है उनके साथ घरेलू भाषा का भरपूर और सुनियोजित उपयोग किया जाना चाहिए। यह स्कूल की अकादमिक भाषा के साथ भाषायी संक्रमण के संघर्ष को कम करता है और इसके अलावा कक्षा शिक्षण में बच्चे की भाषा का उपयोग उसे आत्म-विश्वास से भर देता है। विशेष रूप से यह उन अल्पसंख्यक, दलित, आदिवासी समुदाय के बच्चों के लिए और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है जिनकी भाषा, संस्कृति को मुख्यधारा में सम्मान एवं भागीदारी नहीं मिल पाई है, जो कि एक लोकतांत्रिक समाज में होनी चाहिए।
- स्कूल में पहले दिन से ही बच्चे के लिए पढ़ने की सामग्री का सार्थक होना जरूरी है और यह सार्थकता उस बच्चे के संदर्भ में आंकी जानी चाहिए जो उक्त सामग्री का पाठक है। ◆